बा-हमी शकर रन्जियों का ब तरीके अहसन हल पेश करने वाला म-दनी गुलदस्ता

Faislaa karne ke Madani Phool (Hindi)

फ़ैसला करने के म-दनी फूल

- आदिल क़ाज़ी 05
- जान दे दी, मन्सबे क़ज़ा क़बूल न किया 11
- आदाबे फ़ैसला 14
- सरकारे मदीना का फ़ैसला न मानने का अन्जाम 17
- ज़िम्मादारी मांग कर लेने का नुक़्सान 25
- दोस्त के क़ातिल 40
- अमीरे अहले सुन्नत का फ़ैसला करने का अन्दाज़ 50

: पेशकश :

मर्कज़ी मजलिसे शूरा

(दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्म व ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (المُستطرف ج۱ ص۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

फ़ैसला करने के म-दनी फूल

येह रिसाला (**फ़ैसला करने के म-दनी फूल**)

मक-त-बतुल मदीना से **उर्दू** ज़बान में मर्कज़ी मजलिसे शूरा (दा'वते इस्लामी) की पेशकश से शाएअ़ हुवा है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा,

अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409

E-mail : tarajimhind@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

फ़ैसला करने के म-दनी फूल

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

मदीने के सुल्तान, रहमते आ-लमियान, सरवरे ज़ीशान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जो मुझ पर जुमुआ के दिन और रात 100 मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़े अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की 100 हाजतें पूरी फ़रमाएगा, 70 आख़िरत की और 30 दुन्या की और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर फ़रमा देगा जो उस दुरूदे पाक को मेरी क़ब्र में यूं पहुंचाएगा जैसे तुम्हें तहाइफ़ पेश किये जाते हैं, बिला शुबा मेरा इल्म मेरे विसाल के बा'द वैसा ही होगा जैसा मेरी हयात में है।"

(جَمْعُ الْجَوامِع لِلسُّيُوطی ، الحدیث۲۲۳۵۵، ج۷، ص۱۹۹)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

1.....मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी व निगराने मर्कज़ी मजलिसे शूरा हज़रत मौलाना हाजी मुहम्मद इमरान अत्तारी سَلَّمَهُ الْبَارِى ने बरोज़ इतवार 21 रबीउल ग़ौस 1432 सि.हि. ब मुताबिक़ 27 मार्च 2011 सि.ई. को तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के आलमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना कराची में वु-कला व जजिज़ के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में येह बयान बनाम "वकील को कैसा होना चाहिये ?" फ़रमाया। इस का एक हिस्सा "फ़ैसला करने के म-दनी फूल" ज़रूरी तरमीम व इज़ाफ़े के बा'द पेश किया जा रहा है।

सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़ैसला

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक लश्कर हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की सर-बराही में रवाना फ़रमाया जिस में हज़रते सय्यिदुना अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ भी शरीक थे। जिन लोगों से जिहाद करना था जब उन का अ़लाक़ा क़रीब आया तो रात हो जाने के सबब लश्कर ठहर गया और ज़ुल उ़यय-नतैन नामी एक शख़्स ने जा कर क़ौमे कुफ़्फ़ार को इस्लामी लश्कर के ह़म्ले की ख़बर दे दी। चुनान्चे वोह मुस्लमानों के ह़म्ले से आगाह होते ही रातों रात अपना माल व मताअ़ और अहलो इ़याल ले कर भाग खड़े हुए मगर एक शख़्स न भागा बल्कि अपना सामान और बाल बच्चों को जम्अ़ किया और भागने से पहले छुप कर लश्करे इस्लाम में आया, यहां आ कर हज़रते सय्यिदुना अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के मु-तअ़ल्लिक़ पूछा और जब उन से मुलाक़ात हुई तो अ़र्ज़ की, कि मैं मुसल्मान हो चुका हूं और मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم उस के बन्दे और रसूल हैं। उस ने येह भी बताया कि उस की क़ौम ह़म्ले की ख़बर पा कर भाग गई है और यहां सिर्फ़ वोही रह गया है और क्या उस का इस्लाम लाना कुछ मुफ़ीद होगा ? अगर उस की जान और माल मह़फ़ूज़ रहे तो यहां ठहरा रहे वरना वोह भी भाग जाए। तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि तुम्हारा ईमान ज़रूर तुम्हें नफ़अ़ देगा, तुम इत़्मीनान से

रहो, मैं तुम्हें अमान देता हूं। वोह शख़्स मुत्मइन हो कर लौट गया और सुब्ह़ को जब लश्करे इस्लाम ने उस बस्ती पर ह़म्ला किया तो देखा कि सिवाए एक घर के बाक़ी सारे ख़ाली पड़े हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उस शख़्स को बाल बच्चों समेत क़ैद कर लिया और उस के माल पर भी क़ब्ज़ा कर लिया, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्मार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को जब येह मा'लूम हुवा तो आप ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास आए और फ़रमाया कि इसे छोड़ दें मैं इसे अमान दे चुका हूं और येह मुसल्मान भी हो चुका है। ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि मैं लश्कर का अमीर हूं आप को अमान देने का क्या ह़क़ था ?

इस पर इन दोनों हस्तियों में शकर रन्जी (मा'मूली सी रन्जिश) हो गई, इस ह़ाल में येह ह़ज़रात मदीनए त़य्यिबा ह़ाज़िर हुए और येह मुक़द्दमा बारगाहे नुबुव्वत में पेश हुवा तो हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़म्मार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की अमान को जाइज़ रखा और उस शख़्स को मअ़ उस के माल व अस्बाब और अहलो इ़याल छोड़ दिया, फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्मार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को ताकीद फ़रमाई कि वोह आयन्दा बिग़ैर इजाज़त किसी को अमान न दिया करें। ह़ज़रते ख़ालिद ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या आप अ़म्मार जैसे ग़ुलाम को इस बात की इजाज़त देते हैं कि वोह मेरा मुक़ाबला करे ? तो सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने (नाराज़ी का इज़्हार करते हुए)

इर्शाद फ़रमाया : जो अ़म्मार को बुरा भला कहे खु़दा उस का बुरा करे, जो अ़म्मार से बुग़्ज़ रखे खु़दा उस से नाराज़ हो जाए, जो अ़म्मार पर ला'न ता'न करे खु़दा उस पर ला'न ता'न करे। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्मार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ चूंकि ह़ज़रते सय्यिदुना खा़लिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की बात सुन कर गुस्से से बारगाहे बेकस नवाज़ से रवाना हो चुके थे लिहाज़ा ह़ज़रते सय्यिदुना खा़लिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का येह फ़रमान सुन कर फ़ौरन उन के पीछे दौड़े और रास्ते में ही उन्हें जा लिया और पीछे से उन का दामन पकड़ कर लिपट गए और मा'ज़िरत कर के उन को राज़ी कर लिया इस मौक़अ़ पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई :

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اَطِیْعُوا اللّٰهَ وَ اَطِیْعُوا الرَّسُوْلَ وَ اُولِی الْاَمْرِ مِنْكُمْۚ فَاِنْ تَنَازَعْتُمْ فِیْ شَیْءٍ فَرُدُّوْهُ اِلَى اللّٰهِ وَ الرَّسُوْلِ اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ الْیَوْمِ الْاٰخِرِؕ ذٰلِكَ خَیْرٌ وَّ اَحْسَنُ تَاْوِیْلًا۠ ﴿۵۹﴾ (پ۵، النساء:۵۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो हुक्म मानो अल्लाह का और हुक्म मानो रसूल का और उन का जो तुम में हुकूमत वाले हैं फिर अगर तुम में किसी बात का झगड़ा उठे तो उसे अल्लाह और रसूल के हुज़ूर रुजूअ़ करो अगर अल्लाह व क़ियामत पर ईमान रखते हो येह बेहतर है और इस का अन्जाम सब से अच्छा।

(تفسیر الطبری، پ۵، النساء، تحت الآیة:۵۹، ج۴، ص ۱۵۱)

سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! **प्यारे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने कि

हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने कैसे मीठे अन्दाज़ में दो सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان में पैदा होने वाली शकर रन्जी को दूर फ़रमाया और फिर सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने भी कमाले इताअत का कैसा सबूत दिया कि फ़ौरन एक दूसरे से राज़ी हो गए। साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के इस मुबारक फ़ैसले से येह भी मा'लूम हुवा कि जब क़ाज़ी की अदालत में कोई ऐसा मुक़द्दमा पेश हो जिस में एक फ़रीक़ आ'ला और दूसरा अदना मरतबे वाला हो तो उसे किसी के मरतबे का लिहाज़ रखे बिग़ैर हक़ बात ही का फ़ैसला करना चाहिये। चुनान्चे,

आदिल क़ाज़ी (Righteous Judge)

अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم जंगे सिफ़्फ़ीन के लिये रवाना हुए तो रास्ते में आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की ज़िरह ऊंट से गिर गई। जंग ख़त्म होने के बा'द आप वापस कूफ़ा तशरीफ़ लाए तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने वोह ज़िरह एक यहूदी के पास देखी जो बाज़ार में उसे बेच रहा था, आप ने ज़िरह पहचान कर यहूदी से इर्शाद फ़रमाया : ''येह ज़िरह तो मेरी है, मैं ने किसी को फ़रोख़्त की है न हिबा की है, फिर तेरे पास कैसे पहुंची ?'' यहूदी ने अर्ज़ की : ''जनाब ! येह ज़िरह मेरी है और मेरे क़ब्ज़े में है।'' तो आप ने फ़रमाया : ''चलो ! हम क़ाज़ी के पास चलते हैं।'' चुनान्चे, जब दोनों क़ाज़ी शुरैह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के पास पहुंचे तो

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ क़ाज़ी शुरैह़ के पहलू में और यहूदी उन के सामने बैठ गया। फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इर्शाद फ़रमाया कि अगर मेरा मुख़ालिफ़ यहूदी न होता तो मैं उस के साथ मजलिसे अ़दालत में बराबर खड़ा होता, मगर मैं ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को येह इर्शाद फ़रमाते सुना है कि यहूदियों को ह़क़ीर समझो जैसा कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इन्हें ह़क़ीर क़रार दिया है।

क़ाज़ी शुरैह़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अ़र्ज़ की : "ऐ अमीरुल मुअमिनीन ! फ़रमाइये ! क्या इस यहूदी से आप का कोई मुआ़-मला है ?" तो आप ने फ़रमाया : "हां ! येह ज़िरह जो यहूदी के क़ब्ज़े में है, मेरी है, मैं ने इसे बेचा न हिबा किया।" क़ाज़ी साहिब ने यहूदी से पूछा कि तू क्या कहता है ? वोह बोला कि ज़िरह मेरी है और मेरे क़ब्ज़े में है। क़ाज़ी साहिब ने अमीरुल मुअमिनीन से पूछा कि क्या आप के पास गवाह हैं ? तो आप ने फ़रमाया : "हां ! मेरा गुलाम क़म्बर और मेरा बेटा ह़सन गवाही देंगे कि येह ज़िरह मेरी है।" तो क़ाज़ी शुरैह़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने येह कहते हुए कि "**बाप के ह़क़ में बेटे की गवाही शरअ़न मो'तबर नहीं**" यहूदी के ह़क़ में फ़ैसला दे दिया। येह देख कर यहूदी कहने लगा कि अमीरुल मुअमिनीन मुझे अपने ही क़ाज़ी के पास लाए और उन के क़ाज़ी ने उन के ख़िलाफ़ ही फ़ैसला दे दिया। मैं गवाही देता हूं कि बेशक येह दीन सच्चा है और येह गवाही भी देता हूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं

और ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सच्चे रसूल हैं, ऐ अमीरुल मुअमिनीन ! येह ज़िरह आप ही की है ।

(حلیۃ الاولیاء، الرقم ۲۵۷ شریح بن حارث الکندی، الحدیث:۵۰۸۶، ج۴، ص۱۵۳)

سُبۡحٰنَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ **! मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने कि इस्लाम ने अपने मानने वालों की कैसी आ'ला तरबिय्यत की, कि ख़लीफ़ए वक़्त एक अ़ाम आदमी की त़रह़ क़ाज़ी की अ़दालत में पेश होता है और क़ाज़ी ख़लीफ़ा के ख़िलाफ़ और यहूदी के ह़क़ में फ़ैसला करने में ज़र्रा भर तअम्मुल से काम नहीं लेता क्यूं कि मन्सबे क़ज़ा का येही तक़ाज़ा था कि कोई भी हो फ़ैसला ह़क़ व इन्साफ़ पर मब्नी होना चाहिये । जैसा कि **सूरए निसाअ** में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने अ़ालीशान है :

وَ اِذَا حَكَمْتُمْ بَیْنَ النَّاسِ اَنْ تَحْكُمُوْا بِالْعَدْلِ ؕ
(پ۵، النساء:۵۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और येह कि जब तुम लोगों में फ़ैसला करो तो इन्साफ़ के साथ फ़ैसला करो ।

सलफ़ सालिह़ीन और मन्सबे क़ज़ा

मन्सबे क़ज़ा का ह़क़ अदा करते हुए फ़ैसला करना बड़ा ही जान जोखों का काम है और बहुत से सलफ़ सालिह़ीन رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने इस ह़स्सास मन्सब से बचने में ही अ़ाफ़ियत जानी । चुनान्चे,

अ़ब्बासी ख़लीफ़ा मन्सूर ने क़ाज़ियुल कु़ज़ाह (या'नी चीफ़ जस्टिस) के मन्सब पर किसी आ़लिमे दीन को मुक़र्रर करने का इरादा किया और इस सिल्सिले में उस की नज़रे इन्तिख़ाब चार जलीलुल क़द्र हस्तियों पर ठहरी। चुनान्चे, उस ने उन चारों या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा, ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी, ह़ज़रते सय्यिदुना शरीक और ह़ज़रते सय्यिदुना मिस्अ़र رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی को दरबार में त़लब किया। इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने अपने साथियों से इर्शाद फ़रमाया कि मैं किसी ह़ीले से इस मन्सब को क़बूल करने से जान छुड़ा लूंगा। ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ने फ़रमाया कि वोह भाग जाएंगे मगर येह मन्सब क़बूल नहीं करेंगे। ह़ज़रते सय्यिदुना मिस्अ़र رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया कि वोह बचने कि लिये ख़ुद को पागल और दीवाना ज़ाहिर करेंगे और ह़ज़रते सय्यिदुना शरीक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाने लगे कि (अगर आप लोग ऐसा करेंगे तो) मैं उसे क़बूल करने से नहीं बच पाऊंगा। चुनान्चे जब मन्सूर का दरबारी सिपाही उन्हें लेने आया तो ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ने उस से फ़रमाया : "मैं क़ज़ाए ह़ाजत करना चाहता हूं।" पस आप एक दीवार के पीछे छुप गए। (क़रीब ही दरिया था) आप ने दरिया में झाड़ियों से भरी हुई एक किश्ती देखी तो मल्लाह़ से फ़रमाया : "इस दीवार के पीछे एक शख़्स है जो मुझे क़त्ल करना चाहता है।" इस से आप की मुराद सरवरे काएनात صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के इस

फ़रमान की त़रफ़ इशारा करना था कि "जिसे मन्सबे क़ज़ा पर फ़ाइज़ किया गया गोया उसे बिग़ैर छुरी के ज़ब्ह़ कर दिया गया।" (سنن ابي داود، كتاب الأقضية، باب في طلب القضاء، الحديث: ٣٥٧٢، ج٣، ص٤١٧) पस मल्लाह़ ने आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی علیہ की बात सुन कर आप को किश्ती में झाड़ियों के नीचे छुपा दिया।

जब दरबारी सिपाही ने काफ़ी देर गुज़र जाने के बा'द तलाश किया तो आप कहीं नज़र न आए तो वोह बक़िय्या तीनों ह़ज़रात को ही ले कर ख़लीफ़ा मन्सूर के पास चला गया। ह़ज़रते सय्यिदुना मिस्अ़र رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی علیہ दरबार में पहुंचते ही ख़लीफ़ा से पूछने लगे जनाब आप के जानवरों का क्या ह़ाल है ? और आप के ख़ुद्दाम कैसे हैं ? आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی علیہ की ऐसी बातें सुन कर उन लोगों ने आप को मजनूं और दीवाना समझते हुए आप को भी जाने दिया (कि येह जब आदाबे मजलिस से भी आगाह नहीं तो क़ाज़ी कैसे बनेंगे)। अब ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم की बारी आई तो आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی علیہ ने फ़रमाया : "मैं कपड़े का कारोबार करता हूं और कूफ़ा के अशराफ़ कभी इस बात पर राज़ी न होंगे कि उन का क़ाज़ी एक कपड़े बेचने वाला शख़्स हो।" और एक रिवायत में है कि आप ने फ़रमाया : "अगर मुझे क़ाज़ी बनाया गया तो कूफ़ा के लोग मुझे मज़दूर कहेंगे।"

जब ह़ज़रते सय्यिदुना शरीक رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی علیہ की बारी आई तो आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی علیہ ने उ़ज़्र पेश किया कि उन्हें निस्यान का

मरज़ लाहि़क़ है। तो ख़लीफ़ा ने कहा कि वोह आप को ऐसे मग़्ज़ियात वग़ैरा खिलाएगा कि येह मरज़ ख़त्म हो जाएगा। फिर आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपनी कमज़ोरी व ना तुवानी का ज़िक्र किया तो ख़लीफ़ा ने कहा कि हम इस के ख़ातिमे के लिये आप को रोग़ने बादाम से तय्यार कर्दा ह़ल्वा-जात खिलाया करेंगे। चुनान्चे, जब कोई राहे नजात न पाई तो चारो नाचार राज़ी हो कर फ़रमाने लगे : मुझे मन्सबे क़ज़ा मन्ज़ूर तो है मगर इस सिल्सले में मैं किसी की परवाह न करूंगा ख़्वाह वोह आप का दरबारी व क़रीबी साथी ही हो। ख़लीफ़ा ने आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की येह बात भी मानते हुए कहा मुझे मन्ज़ूर है : आप को ह़क़ ह़ासिल होगा अगर फ़ैसला मेरे या मेरी औलाद के ख़िलाफ़ भी हुवा तो कर दीजियेगा। इस त़रह़ आप को मन्सबे क़ज़ा पर फ़ाइज़ कर दिया गया। एक दिन आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मस्नदे क़ज़ा पर तशरीफ़ फ़रमा थे कि ख़लीफ़ा का एक ख़ास ग़ुलाम ह़ाज़िर हुवा जिस का किसी के साथ झगड़ा हो गया था। उस ग़ुलाम ने अपने मुक़ाबिल से आगे बढ़ कर मुमताज़ जगह बैठना चाहा तो ह़ज़रते सय्यिदुना शरीक رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उसे डांट दिया। तो वोह बरहम हो कर बोला : लगता है आप अह़मक़ हैं। आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : मैं ने पहले ही तुम्हारे आक़ा से कहा था मगर वोह नहीं माना और मुझे ज़बर दस्ती क़ाज़ी बना दिया। चुनान्चे इस के बा'द आप को इस मन्सब से हटा दिया गया।

(المناقب للکردری، ج ۱، ص ۲۰۴ تا ۲۰۵)

जान दे दी, मन्सबे क़ज़ा क़बूल न किया

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना के मत़्बूआ़ 36 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले, "**अश्कों की बरसात**" सफ़ह़ा 27 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : "अ़ब्बासी ख़लीफ़ा मन्सूर ने इमामे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से अ़र्ज़ किया कि आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ मेरी मम्लुकत के क़ाज़ियुल क़ुज़ाह (या'नी चीफ़ जज) बन जाइये । फ़रमाया : मैं इस ओ़हदे के क़ाबिल नहीं । मन्सूर बोला : आप झूट कहते हैं । आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : अगर मैं झूट बोलता हूं तो आप ने खुद ही फ़ैसला कर दिया ! झूटा शख़्स क़ाज़ी बनने के लाइक़ ही नहीं होता । ख़लीफ़ा मन्सूर ने इस बात को अपनी तौहीन तसव्वुर करते हुए आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को जेल भिजवा दिया । रोज़ाना आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के सरे मुबारक पर दस10 कोड़े मारे जाते जिस से ख़ून सरे अक़्दस से बह कर टख़्नों तक आ जाता, इस त़रह़ मजबूर किया जाता रहा कि क़ाज़ी बनने के लिये ह़ामी भर लें मगर आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ हुकूमती ओ़हदा क़बूल करने के लिये राज़ी न हुए । इसी त़रह़ आप को यौमिय्या दस10 के ह़िसाब से एक सो दस110 कोड़े मारे गए । लोगों की हम-दर्दियां इमामे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के साथ थीं । बिल आख़िर धोके से **ज़ह्र का पियाला** पेश किया गया मगर आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ मुअमिनाना फ़िरासत से

ज़ह्र को पहचान गए और पीने से इन्कार फ़रमा दिया, इस पर आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के लिटा कर ज़बर दस्ती ह़ल्क़ में ज़ह्र उंडेल दिया गया। ज़ह्र ने जब अपना असर दिखाना शुरूअ़ किया तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ बारगाहे ख़ुदा वन्दी में सज्दा रैज़ हो गए और सज्दे ही की ह़ालत में 150 सि.हि. आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने जामे शहादत नोश किया। (الخیرات الحسان، ص۸۸ تا ۹۲) उस वक़्त आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की उ़म्र शरीफ़ 80 बरस थी। बग़दादे मुअ़ल्ला में आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का मज़ारे फ़ाइज़ुल अन्वार आज भी मर्जए ख़लाइक़ है।

दियारे बग़दाद में बुला कर, मज़ार अपना दिखा, जहां पर
हैं नूर की बारिशें छमा छम, इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा

(वसाइले बख़्शिश स. 504)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

शकर रन्जियां और उन के नुक़्सानात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बा'ज़ अवक़ात कुछ इस्लामी भाइयों के माबैन ग़लत़ फ़हमियों वग़ैरा की बिना पर शकर रन्जियां पैदा हो जाती हैं और बात बढ़ते बढ़ते शदीद अ़दावत तक पहुंच कर क़त़्ए तअ़ल्लुक़ी पर ख़त्म होती है। फिर ऐ़ब जूई, ग़ीबत, चुग़ली, ग़लत़ बयानी और बोहतान तराशी की गर्म बाज़ारी के सबब नामए आ'माल की सियाही और अना व ज़िद की वजह से त़-रफ़ैन की तबाही का इन्तिज़ाम होने लगता है। यक़ीनन येह शैत़ाने लईन के कारनामे हैं कि येह मुसल्मानों बिल ख़ुसूस नेकी की दा'वत देने वालों को आपस में लड़वा कर अपने

मक्सदे अस्ली (म-दनी काम) से तवज्जोह हटाने की कोशिश करता है। शैत़ान के इन फ़ितनों से शायद ही कोई घर, इदारा या तन्ज़ीम मह़फ़ूज़ हो। चुनान्चे,

शैत़ान आपस में लड़वाता है

दा'वते इस्लामी के इशाइती इदारे मक-त-बतुल मदीना के मत़्बूआ़ 40 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले, **"ना चाक़ियों का इलाज"** सफ़ह़ा 5 ता 6 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** याद रखिये ! शैत़ान मरदूद मुसल्मानों में फूट डलवाता, लड़वाता और क़त्लो ग़ारत गरी करवाता है, नीज़ इन्हें सुल्ह़ पर आमादा होने ही नहीं देता। बल्कि बारहा ऐसा भी होता है कि कोई नेक दिल इस्लामी भाई बीच में पड़ कर उन में सुल्ह़ करवा भी दे तब भी त़रह़ त़रह़ के वस्वसे डाल कर भड़काता है।

शैत़ान मक्कार व ना-बकार के वार से ख़बरदार करते हुए पारह 15 सूरए **बनी इस्राईल** की 53वीं आयते करीमा में हमारा प्यारा परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

إِنَّ الشَّيْطٰنَ يَنْزَغُ بَيْنَهُمْ ط

(پ ۱۵، بنی اسرائیل:۵۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक शैत़ान उन के आपस में फ़साद डालता है।

(ना चाक़ियों का इलाज, स. 5 ता 6)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब इस त़रह़ की सूरते ह़ाल

पैदा होती है तो उस वक़्त लोग उ़मूमन किसी अहम फ़र्द (ख़्वाह वोह किसी घर या क़बीले का सर-बराह हो या किसी इदारे या तन्ज़ीम का बड़ा ज़िम्मादार) की त़रफ़ रुजूअ़ करते हैं और फिर उस फ़र्द को फ़ैसला करने की अहम ज़िम्मादारी अदा करना पड़ती है । येह ज़िम्मादारी उस वक़्त मज़ीद बढ़ जाती है जब ऐसा मुआ़-मला किसी दीनी तन्ज़ीम के ज़िम्मादार के हां पेश होता है कि उस से अगर कोई ग़लत़ फ़ैसला सरज़द हो गया तो त़-रफ़ैन में से दोनों या एक बदज़न हो कर उस ज़िम्मादार.......और ह़माक़त की रफ़ाक़त हुई तो तन्ज़ीम........बल्कि शक़ावत की नुहूसत भी साथ हुई तो दीन से दूर हो कर फिर से गुनाहों भरे गन्दे माह़ोल में पड़ सकता है ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

आदाबे फ़ैसला

लिहाज़ा ह़कम (या'नी फ़ैसला करने वाले) के लिये निहायत ज़रूरी है कि वोह फ़ैसला करने के लिये ज़रूरी शर-ई आदाब जानता हो, जिन्हें पेशे नज़र रख कर इन्तिहाई ह़िक्मते अ़-मली से फ़ैसला करे । चुनान्चे, ज़ैल में फ़ैसला करने के कुछ आदाब बयान किये जाते हैं ।

﴾1﴿ उ़-लमाए किराम की ख़िदमत में ह़ाज़िर हों

दो इस्लामी भाइयों में किसी क़िस्म का निज़ाअ़ वाक़ेअ़ हो तो उन्हें चाहिये कि निज़ाअ़ का शर-ई ह़ल तलाश करने के लिये

उ़-लमाए किराम دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ख़िदमत में ह़ाज़िर हों। जैसा कि फ़रमाने बारी तआ़ला है :

وَلَوْ رَدُّوْهُ اِلَى الرَّسُوْلِ وَاِلٰٓى اُولِى الْاَمْرِ مِنْهُمْ لَعَلِمَهُ الَّذِيْنَ يَسْتَنْۢبِطُوْنَهٗ مِنْهُمْ ؕ (پ۵، النساء:۸۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और अगर उस में रसूल और अपने ज़ी इख़्तियार लोगों की त़रफ़ रुजूअ़ लाते तो ज़रूर इन से उस की ह़क़ीक़त जान लेते येह जो बा'द में काविश करते हैं।

प्यारे इस्लामी भाईयो ! मा'लूम हुवा कि कुरआनो सुन्नत से मसाइल का ह़ल तलाश करना सिर्फ़ उन्ही लोगों का काम है जो इस के अहल हैं। और जब ह़ल मिल जाए तो क़ील व क़ाल न कीजिये बल्कि सरे तस्लीम ख़म कर दीजिये। चुनान्चे, इर्शादे बारी तआ़ला है :

اِنَّمَا كَانَ قَوْلَ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذَا دُعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ اَنْ يَّقُوْلُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۵۱﴾ (پ۱۸، النور:۵۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : मुसलमानों की बात तो येही है जब **अल्लाह** और रसूल की त़रफ़ बुलाए जाएं कि रसूल उन में फ़ैसला फ़रमाए तो अ़र्ज़ करें हम ने सुना और हुक्म माना और येही लोग मुराद को पहुंचे।

मीठे मीठे इस्लामी भाईयो ! जब कुरआने करीम और सुन्नते रसूले करीम से झगड़े का ह़ल मिल जाए तो उसे मान लेना ह़क़ीक़ी मुसलमान होने की अ़लामत है और जो लोग कुरआनो सुन्नत के फ़ैसलों से इन्ह़िराफ़ करते हैं उन के दिलों में निफ़ाक़ पाया जाता है।

चुनान्चे, ऐसे ही लोगों के बारे में इर्शादे बारी तआ़ला है :

وَ اِذَا دُعُوْۤا اِلَى اللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ لِیَحْكُمَ بَیْنَهُمْ اِذَا فَرِیْقٌ مِّنْهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿۴۸﴾ وَ اِنْ یَّكُنْ لَّهُمُ الْحَقُّ یَاْتُوْۤا اِلَیْهِ مُذْعِنِیْنَ ﴿۴۹﴾ اَفِیْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ اَمِ ارْتَابُوْۤا اَمْ یَخَافُوْنَ اَنْ یَّحِیْفَ اللّٰهُ عَلَیْهِمْ وَ رَسُوْلُهٗ ؕ بَلْ اُولٰٓىٕكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۵۰﴾ (پ۱۸، النور:۴۸ تا ۵۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जब बुलाए जाएं **अल्लाह** और उस के रसूल की त़रफ़ कि रसूल उन में फ़ैसला फ़रमाए तो जभी उन का एक फ़रीक़ मुंह फैर जाता है। और अगर उन की डिग्री हो (उन के ह़क़ में फ़ैसला हो) तो उस की त़रफ़ आएं मानते हुए। क्या उन के दिलों में बीमारी है या शक रखते हैं या येह डरते हैं कि **अल्लाह** व रसूल उन पर ज़ुल्म करेंगे बल्कि वोह खुद ही ज़ालिम हैं।

पस कुफ़्र व निफ़ाक़ की तारीक वादियों में भटकने वाले लोग कभी पसन्द नहीं करते कि उन का फ़ैसला कुरआनो सुन्नत के मुत़ाबिक़ किया जाए। क्यूं कि उन्हें येह फ़िक्र दामन गीर होती है कि अगर कुरआनो सुन्नत के मुत़ाबिक़ फ़ैसला हुवा तो यक़ीनन सच पर मब्नी होगा और ह़क़ीक़त रोज़े रोशन की त़रह़ इयां हो जाएगी और इस त़रह़ झूट का पर्दा फ़ाश होने से उन की जग-हंसाई होगी। चुनान्चे,

सदरुल अफ़ाज़िल, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नई़मुद्दीन मुरादआबादी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی "ख़ज़ाइनुल इरफ़ान" में इन आयाते मुबा-रका की तफ़्सीर करते हुए फ़रमाते हैं कि "कुफ़्फ़ार व

मुनाफ़िक़ीन बारहा तजरिबा कर चुके थे और उन्हें कामिल यक़ीन था कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़ैसला सरासर ह़क़ व अ़द्ल होता है, इस लिये उन में जो सच्चा होता वोह तो ख़्वाहिश करता था कि हु़ज़ूर उस का फ़ैसला फ़रमाएं और जो नाह़क़ पर होता वोह जानता था कि रसूले अकरम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की सच्ची अ़दालत से वोह अपनी ना जाइज़ मुराद नहीं पा सकता। इस लिये वोह हु़ज़ूर के फ़ैसले से डरता और घबराता था।

शाने नुज़ूल : बिश्र नामी एक मुनाफ़िक़ था एक ज़मीन के मुआ़-मले में उस का एक यहूदी से झगड़ा था यहूदी जानता था कि इस मुआ़-मले में वोह सच्चा है और उस को यक़ीन था कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ह़क़ व अ़द्ल का फ़ैसला फ़रमाते हैं इस लिये उस ने ख़्वाहिश की, कि इस मुक़द्दमे का हु़ज़ूर عَلَيۡهِ السَّلَام से फ़ैसला कराया जाए लेकिन मुनाफ़िक़ भी जानता था कि वोह बाति़ल पर है और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अ़द्लो इन्साफ़ में किसी की रू रिआ़यत नहीं फ़रमाते इस लिये वोह हु़ज़ूर के फ़ैसले पर तो राज़ी न हुवा और का'ब बिन अशरफ़ यहूदी से फ़ैसला कराने पर मुसिर हुवा और हु़ज़ूर की निस्बत कहने लगा कि वोह हम पर ज़ुल्म करेंगे। इस पर येह आयत नाज़िल हुई।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह : 18, अन्नूर : 48 ता 50)

सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़ैसला न मानने का अन्जाम

इमाम ह़कीम तिरमिज़ी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی ने ह़ज़रते मक्हूल رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيۡه से एक क़ौल नक़्ल किया है कि दो बन्दों के दरमियान

एक शै में झगड़ा हो गया उन में से एक मुनाफ़िक़ और दूसरा मोमिन था। मुनाफ़िक़ का दा'वा था कि येह शै उस की है। चुनान्चे, दोनों बारगाहे नुबुव्वत में ह़ाज़िर हुए और सारा मुआ़-मला अ़र्ज़ किया। जब सरकारे अबद क़रार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़क़ बात का फ़ैसला फ़रमाते हुए मोमिन के ह़क़ में और मुनाफ़िक़ के ख़िलाफ़ फ़ैसला फ़रमाया तो वोह फ़ौरन बोला : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! हम दोनों को इस बात के फ़ैसले के लिये सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ के पास भेज दीजिये।" सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ठीक है तुम दोनों अबू बक्र के पास चले जाओ।" जब उन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर सारी बात बताई और सरवरे काएनात صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़ैसले से भी आगाह किया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इर्शाद फ़रमाया : "मैं उन लोगों के दरमियान फ़ैसला करने का अहल नहीं जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़ैसले से मुंह फैरते हैं।" बारगाहे सिद्दीक़ से मायूस हो कर जब वोह मुनाफ़िक़ अपने मोमिन साथी के साथ वापस बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुवा तो फिर अ़र्ज़ की, कि उन्हें ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास भेज दिया जाए। जब सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह इजाज़त भी दे दी तो मोमिन ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या ऐसे शख़्स के साथ सय्यिदुना उ़मर के पास जाऊं जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ

और उस के रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़ैसले से इन्हिराफ़ करने वाला है।'' तो सरकार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''तुम इस के साथ जाओ।'' जब दोनों अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और सारा मुआ़-मला बयान किया तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ ने इर्शाद फ़रमाया : ''जाने में जल्द बाज़ी का मुज़ा-हरा न करना जब तक कि मैं तुम्हारे पास न आ जाऊं।'' इस के बा'द आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ घर जा कर अपनी तलवार उठा लाए और वापस आ कर फ़रमाया : ''अब दोबारा अपना मुआ़-मला बयान करो।'' जब दोनों ने सारा मुआ़-मला बयान किया और अमीरुल मुअमिनीन उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ पर ख़ूब वाज़ेह़ हो गया कि मुनाफ़िक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़ैसले से रू गर्दानी कर रहा है तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ ने अपनी तलवार से मुनाफ़िक़ के सर पर ऐसा वार किया कि तलवार उस के जिगर तक पहुंच गई, फिर इर्शाद फ़रमाया : ''जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़ैसला न माने मैं उस का फ़ैसला इस त़रह़ करता हूं।'' इधर जिब्राईले अमीन عَلَيۡهِ السَّلَام फ़ौरन बारगाहे नुबुव्वत में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! उ़मर ने एक शख़्स को क़त्ल कर दिया है क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उ़मर की ज़बान से ह़क़ व बात़िल के दरमियान फ़र्क़ कराना चाहता था।'' येही वजह है कि आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ को ''फ़ारूक़'' कहा जाने लगा।

(نـوادر الاصـول فـی احـادیـث الـرسـول، الاصل الثالث والاربعون، فی تسلیم الحق وسر مصافحته لعمر رضی اللّٰہ تعالٰی عنه، الحدیث:۲۶۸، ج ا، ص۱۷۲)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें इताअत व फ़रमां बरदारी की तौफ़ीक़ इनायत फ़रमाए कि जब भी कोई निज़ाअ पैदा हो तो हम उसे कुरआनो सुन्नत के सुनहरी उसूलों के मुताबिक़ हल करने की कोशिश करें । नीज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें हमेशा मुनाफ़िक़ीन व कुफ़्फ़ार जैसे तर्ज़े अमल से महफ़ूज़ फ़रमाए ।

(اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾2﴿ जो अहल हो वोही फ़ैसला करे

अगर दो इस्लामी भाइयों के दरमियान किसी बात पर शदीद इख़्तिलाफ़ पैदा हो जाए और उन्हें उस का कोई हल नज़र न आता हो तो वोह किसी ऐसे ज़िम्मादार इस्लामी भाई की ख़िदमत में हाज़िर हों जो उन के दरमियान फ़ैसला करने की अहलिय्यत रखता हो । चुनान्चे,

जिस इस्लामी भाई की ख़िदमत में फ़रीक़ैन हाज़िर हों, अगर सिर्फ़ वोही उस झगड़े का फ़ैसला कर सकता हो और किसी दूसरे में सलाहिय्यत ही न हो कि इन्साफ़ करे तो इस सूरत में उस इस्लामी भाई पर वाजिब है कि वोह उन के इख़्तिलाफ़ को ख़त्म कर दे । और अगर कोई दूसरा इस्लामी भाई भी इस क़ाबिल हो मगर येह ज़ियादा सलाहिय्यत रखता है तो अब उस को क़बूल कर लेना मुस्तहब है और अगर दूसरे भी इसी क़ाबिलिय्यत के हैं तो

इख़्तियार है क़बूल करे या न करे और अगर येह सलाहिय्यत रखता है मगर दूसरा इस से बेहतर है तो इस को क़बूल करना मक्रूह है और येह शख़्स अगर ख़ुद जानता है कि येह काम मुझ से अन्जाम न पा सकेगा तो क़बूल करना ह़राम है।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب أدب القاضی،الباب الثانی فی الدخول فی القضاء، ج۳،ص ۳۱۱ مفھوماً)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जो अपने अन्दर ह़क़ बात का फ़ैसला करने की अहलिय्यत न पाता हो तो वोह फ़रीक़ैन से अ़र्ज़ कर दे कि वोह इस मुआ़-मले को किसी अहल (बड़े ज़िम्मादार) के पास ले जाएं और इस सूरत में इ़ज़्ज़त व मरतबा के ज़ो'म में ख़ुद को बत़ौरे ह़कम पेश कर के हरगिज़ हलाकत में न पड़े और न ही दिल में ऐसी त़लब व तमन्ना रखे कि येह मुआ़-मला हमारे अन्दाज़े से कहीं बढ़ कर नज़ाकत का ह़ामिल और एह़तियात़ का तक़ाज़ा करने वाला है। चुनान्चे,

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो लोगों के दरमियान क़ाज़ी बनाया गया गोया बिग़ैर छुरी के ज़ब्ह़ कर दिया गया।"

(سنن ابي داود، کتاب الأقضية، باب في طلب القضاء،الحديث:۳۵۷۲، ج۳،ص۴۱۷)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं कि छुरी से ज़ब्ह़ कर देने में जान आसानी से और जल्द निकल जाती है, बिग़ैर छुरी मारने में जैसे गला घोंट कर, डुबो कर, जला कर, खाना पानी बन्द

कर के, इन में जान बड़ी मुसीबत से और बहुत देर में निकलती है। ऐसा क़ाज़ी बदन में मोटा हो जाता है मगर दीन इस त़रह़ बरबाद कर लेता है कि इस की सज़ा दुन्या में भी पाता है और अख़िरत में भी बहुत दराज़, क्यूं कि ऐसा क़ाज़ी ज़ुल्म, रिश्वत, ह़क़ त-लफ़ी वग़ैरा ज़रूर करता है जिस से दुन्या उस पर ला'नत करती है **अल्लाह**, रसूल नाराज़ हैं, फ़िरऔन, ह़ज्जाज, यज़ीद वग़ैरा की मिसालें मौजूद हैं, इस ह़दीस की बिना पर ह़ज़रते इमाम अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने जेल में जान देना क़बूल फ़रमा लिया मगर क़ज़ा क़बूल न फ़रमाई।

(مراۃ شرح المشکاۃ، کتاب الاقضیۃ، الفصل الثانی، ج۵، ص۳۷۷)

कोई इस्लामी भाई जान बूझ कर ऐसा काम क्यूं करेगा कि बिग़ैर छुरी से ज़ब्ह़ करने की त़रह़ ब ज़ाहिर तो आफ़िय्यत में और जाह व अ़-ज़मत वाला हो मगर बात़िनी त़ौर पर हलाकत व बरबादी उस का मुक़द्दर बन जाए।

﴾3﴿ ह़कम बनने की ख़्वाहिश नहीं करना चाहिये

अगर कोई इस्लामी भाई ख़ुद इस ख़्वाहिश का इज़्हार करे कि उसे ह़कम (या'नी फ़ैसला करने वाला) बना दिया जाए तो ऐसा हरगिज़ न किया जाए। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि मैं और मेरी क़ौम के दो शख़्स बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुए, उन में से एक ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم !

मुझे अमीर (लोगों के मुआ़-मलात की देखभाल करने वाला) बना दीजिये।" और दूसरे ने भी येही अ़र्ज़ की तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "हम उस को वाली नहीं बनाते जो इस का सुवाल करे और न उस को जो इस की ह़िर्स करे।"

(صحيح البخاري، كتاب الأحكام، باب مايكره من الحرص على الإمارة، الحديث: ٧١٤٩، ج٤، ص٤٥٦)

ज़िम्मादारी मांग कर लेने की सूरत :

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! कोशिश की जाए कि ज़िम्मादारी मांग कर न ली जाए, अगर्चे ऐसा करना जाइज़ है जब कि अहलिय्यत हो और उस जैसा कोई न हो जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मु-तअ़ल्लिक़ मरवी है कि उन्हों ने ज़िम्मादारी मांग कर ली थी। चुनान्चे,

सूरए यूसुफ़ में है :

قَالَ اجْعَلْنِیْ عَلٰی خَزَآىٕنِ الْاَرْضِۚ اِنِّیْ حَفِیْظٌ عَلِیْمٌ ﴿۵۵﴾
(پ١٣، يوسف: ٥٥)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : यूसुफ़ ने कहा मुझे ज़मीन के ख़ज़ानों पर कर दे बेशक मैं ह़िफ़ाज़त वाला इ़ल्म वाला हूं।

सदरुल अफ़ाज़िल, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नई़मुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى "ख़ज़ाइनुल इरफ़ान" में इस आयते मुबा-रका की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं कि "अह़ादीस में त़-लबे इमारत की मुमा-न-अ़त आई है, इस के येह मा'ना हैं कि जब मुल्क में अहल मौजूद हों और इक़ामते अह़कामे इलाही किसी एक

शख़्स के साथ ख़ास न हो उस वक़्त इमारत त़लब करना मक्रूह है लेकिन जब एक ही शख़्स अहल हो तो उस को अह़कामे इलाहिय्यह की इक़ामत के लिये इमारत त़लब करना जाइज़ बल्कि वाजिब है और ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام इसी ह़ाल में थे आप रसूल थे, उम्मत के मसालेह़ के आ़लिम थे, येह जानते थे कि क़ह़ते़ शदीद होने वाला है जिस में ख़ल्क़ को राह़त व आसाइश पहुंचाने की येही सबील है कि इनाने हुकूमत को आप अपने हाथ में लें इस लिये आप ने इमारत त़लब फ़रमाई ।"

पस जो इस्लामी भाई अच्छी त़रह़ किसी मुआ़-मले की नज़ाकत व ह़क़ीक़त से आगाह हो न उस ने पहले कभी कोई ऐसा काम किया हो तो उस से ग़-लती़ का इम्कान होता है और अगर वोह इस्लामी भाई इस मुआ़-मले को ख़ुश उस्लूबी से पायए तक्मील तक पहुंचाने की सलाहि़य्यत रखता हो तो उसे ज़िम्मादार बनाने में कोई ह़रज नहीं । चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने मुसल्मानों के बाहमी उमूर का फ़ैसला करने का ओ़हदा मांगा यहां तक कि उसे पा लिया फिर उस का अ़द्ल उस के ज़ुल्म पर ग़ालिब रहा (या'नी अ़द्ल ने ज़ुल्म करने से रोका) तो उस के लिये जन्नत है और जिस का ज़ुल्म अ़द्ल पर ग़ालिब आया उस के

लिये जहन्नम है।"

(سنن ابي داود، كتاب الأقضية، باب في القاضي يخطئ، الحديث:٣٥٧٣،ج٣، ص٤١٨)

ज़िम्मादारी मांग कर लेने का नुक़्सान :

मीठे मीठे इस्लामी भाईयो ! ज़िम्मादारी मांग कर न ली जाए, अगर मांग कर ज़िम्मादारी ली जाए तो बा'ज़ अवक़ात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत शामिले ह़ाल नहीं रहती और अगर बिन मांगे मिल जाए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत व नुसरत भी शामिले ह़ाल रहती है। चुनान्चे, मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन समुरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से सरवरे दो जहां, रह़मते आ़-लमियां صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ अ़ब्दुर्रह़मान ! इमारत न मांगो क्यूं कि अगर वोह तुम्हारे मांगने पर तुम्हें दी गई तो तुम्हें भी उस के सिपुर्द कर दिया जाएगा और अगर बिन मांगे दी गई तो उस पर तुम्हारी मदद भी की जाएगी।" (صحيح البخاري، كتاب الأحكام،باب من سأل الإمارة وكل اليها، الحديث:٧١٤٧،ج٤،ص٤٥٦)

दो फ़िरिश्तों की मदद :

मीठे मीठे इस्लामी भाईयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की येह मदद उन दो फ़िरिश्तों के ज़रीए़ होती है जो दुरुस्त फ़ैसला करने में ह़कम को ह़क़ पर साबित क़दम रखते हैं। चुनान्चे,

ह़ज़रते **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब

क़ाज़ी अ़दालत में बैठता है तो दो फ़िरिश्ते उतरते हैं और उस की राय को दुरुस्त रखते हैं, उसे ठीक बात समझने की तौफ़ीक़ देते हैं और उसे सह़ीह़ रास्ता सुझाते हैं जब तक कि ह़क़ से मुंह न मोड़े और जहां उस ने ह़क़ से मुंह मोड़ा फ़िरिश्तों ने भी उसे छोड़ा और आस्मान पर परवाज़ कर गए।'' (السنن الکبریٰ، کتاب آداب القاضی، باب فضل من ابتلی بشیٔ من الاعمال، الحدیث:۲۰۱۶۲، ج۱۰، ص۱۵۱)

फ़ारूक़े आ'ज़म के मददगार फ़िरिश्ते :

ह़ज़रते सय्यिदुना सई़द इब्ने मुसय्यब رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيْه से मरवी है कि एक मुसल्मान और एक यहूदी अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ की ख़िदमत में एक मुक़द्दमा ले कर ह़ाज़िर हुए तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ ने यहूदी को ह़क़ पर देख कर उस के ह़क़ में फ़ैसला फ़रमा दिया। इस पर उस यहूदी ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ से अ़र्ज़ की : ''**अल्लाह** की क़सम ! यक़ीनन आप ने ह़क़ फ़ैसला फ़रमाया है।'' अमीरुल मुअमिनीन सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ ने उसे दुर्रा मार कर दर्याफ़्त फ़रमाया : ''तुझे कैसे मा'लूम हुवा ?'' यहूदी ने अ़र्ज़ की : ''**अल्लाह** की क़सम ! हम तौरैत में पाते हैं कि ऐसा कोई क़ाज़ी नहीं जो ह़क़ के मुत़ाबिक़ फ़ैसला करे मगर एक फ़िरिश्ता उस के दाईं त़रफ़ होता है और एक फ़िरिश्ता बाईं त़रफ़। येह दोनों फ़िरिश्ते उस वक़्त तक उसे राहे रास्त पर रखते हैं और ह़क़ की

तौफ़ीक़ देते हैं जब तक कि वोह ह़क़ पर क़ाइम रहता है और जब ह़क़ को छोड़ देता है तो वोह दोनों उसे छोड़ कर आस्मान पर चले जाते हैं ।

(مشکاۃ المصابیح، کتاب الامارۃ والقضاء، الفصل الثالث، الحدیث:۳۷۴۲، ج۳، ص۳۴۸)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾4﴿ फ़रीक़ैन में सुल्ह़ करा दीजिये

प्यारे इस्लामी भाइयो ! अगर कभी दो इस्लामी भाइयों के दरमियान किसी मुआ़-मले में इख़्तिलाफ़ पैदा हो जाए तो किसी ज़िम्मादार इस्लामी भाई को कोशिश करनी चाहिये कि फ़रीक़ैन आपस में बाहमी बातचीत के ज़रीए़ किसी सूद मन्द नतीजे पर पहुंच कर सुल्ह़ कर लें । चुनान्चे, इर्शादे बारी तआ़ला है :

وَاِنْ طَآىِٕفَتٰنِ مِنَ الْمُؤْمِنِیْنَ اقْتَتَلُوْا فَاَصْلِحُوْا بَیْنَهُمَاۚ فَاِنْۢ بَغَتْ اِحْدٰىهُمَا عَلَى الْاُخْرٰى فَقَاتِلُوا الَّتِیْ تَبْغِیْ حَتّٰى تَفِیْٓءَ اِلٰۤى اَمْرِ اللّٰهِۚ فَاِنْ فَآءَتْ فَاَصْلِحُوْا بَیْنَهُمَا بِالْعَدْلِ وَ اَقْسِطُوْاؕ اِنَّ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और अगर मुसल्मानों के दो गुरौह आपस में लड़ें तो उन में सुल्ह़ कराओ फिर अगर एक दूसरे पर ज़ियादती करे तो उस ज़ियादती वाले से लड़ो यहां तक कि वोह **अल्लाह** के हुक्म की त़रफ़ पलट आए फिर अगर पलट आए तो इन्साफ़ के

اللّٰہَ یُحِبُّ الْمُقْسِطِیْنَ ۝۹ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ اِخْوَۃٌ فَاَصْلِحُوْا بَیْنَ اَخَوَیْکُمْ وَ اتَّقُوا اللّٰہَ لَعَلَّکُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝۱۰ (پ۲۶، الحجرات:۹ تا ۱۰)

साथ उन में इस्लाह़ कर दो और अ़द्ल करो बेशक अ़द्ल वाले **अल्लाह** को प्यारे हैं। मुसल्मान मुसल्मान भाई हैं तो अपने दो भाइयों में सुल्ह़ करो और **अल्लाह** से डरो कि तुम पर रह़मत हो।

सदरुल अफ़ाज़िल, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی "ख़ज़ाइनुल इरफ़ान" में इन आयाते मुबा-रका की तफ़्सीर करते हुए फ़रमाते हैं कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم दराज़ गोश पर सुवार तशरीफ़ ले जाते थे, अन्सार की मजलिस पर गुज़र हुवा, वहां थोड़ा सा तवक्कुफ़ फ़रमाया, उस जगह दराज़ गोश ने पेशाब किया तो **इब्ने उबय** ने नाक बन्द कर ली। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया कि हुज़ूर के दराज़ गोश का पेशाब तेरे मुश्क से बेहतर ख़ुश्बू रखता है, हुज़ूर तो तशरीफ़ ले गए, इन दोनों में बात बढ़ गई और इन दोनों की क़ौमें आपस में लड़ गईं और हाथा पाई तक नौबत पहुंची तो सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم वापस तशरीफ़ लाए और उन में सुल्ह़ करा दी। इस मुआ़-मले में येह आयत नाज़िल हुई। (خزائن العرفان، پ۲۶، الحجرات، تحت الاية:۹)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस से मा'लूम हुवा कि अगर दो इस्लामी भाइयों में किसी मस्अले पर इख़्तिलाफ़ पैदा हो

जाए तो उन में सुल्ह़ करा देना मीठे मीठे मदीने वाले मुस्त़फ़ा करीम صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नते मुबा-रका है । और येह भी जान लीजिये कि सुल्ह़ कराना सिर्फ़ हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ही सुन्नत नहीं बल्कि हमारे प्यारे रब عَزَّوَجَلَّ ने भी हमें इस का हुक्म दिया है । चुनान्चे,

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सुल्ह़ करवाएगा :

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना के मत़्बूआ़ 40 सफ़ह़ात पर मुशतमिल रिसाले, "**ना चाक़ियों का इलाज**" सफ़ह़ा 30 ता 32 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्ता़र क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं एक रोज़ सरकारे दो आ़लम, **नूरे मुजस्सम,** शाहे बनी आदम صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ फ़रमा थे । आप صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने तबस्सुम फ़रमाया । ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर मेरे मां बाप क़ुरबान ! आप صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने किस लिये तबस्सुम फ़रमाया ?" इर्शाद फ़रमाया : "मेरे दो उम्मती **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दो ज़ानू गिर पड़ेंगे, एक अ़र्ज़ करेगा : "**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस से मेरा इन्साफ़ दिला कि इस ने मुझ पर ज़ुल्म किया था ।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ

मुद्दई (या'नी दा'वा करने वाले) से फ़रमाएगा : "अब येह बेचारा (या'नी जिस पर दा'वा किया गया है वोह) क्या करे इस के पास तो कोई नेकी बाक़ी नहीं ।" मज़्लूम (**मुद्दई**) अ़र्ज़ करेगा : "मेरे गुनाह इस के ज़िम्मे डाल दे ।" इतना इर्शाद फ़रमा कर सरवरे काएनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم रो पड़े । फ़रमाया : "वोह दिन बहुत अ़ज़ीम दिन होगा । क्यूं कि उस वक़्त (या'नी बरोज़े क़ियामत) हर एक इस बात का ज़रूरत मन्द होगा कि उस का बोझ हलका हो । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मज़्लूम से फ़रमाएगा : "देख तेरे सामने क्या है ?" वोह अ़र्ज़ करेगा : "ऐ परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! मैं अपने सामने सोने के बड़े शहर और बड़े बड़े महल्लात देख रहा हूं जो मोतियों से आरास्ता हैं । येह शहर और उ़म्दा महल्लात किस पैग़म्बर या सिद्दीक़ या शहीद के लिये हैं ?" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : "येह उस के लिये हैं जो इन की क़ीमत अदा करे ।" बन्दा अ़र्ज़ करेगा : "इन की क़ीमत कौन अदा कर सकता है ?" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : "तू अदा कर सकता है ।" वोह अ़र्ज़ करेगा : "वोह किस त़रह़ ?" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : "इस त़रह़ कि तू अपने भाई के हुक़ूक़ मुआ़फ़ कर दे ।" बन्दा अ़र्ज़ करेगा : "**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने सब हुक़ूक़ मुआ़फ़ किये ।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : "अपने भाई का हाथ पकड़ो और दोनों इकठ्ठे जन्नत में चले जाओ ।" फिर सरकारे नामदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरो और मख़्लूक़

में सुल्ह़ करवाओ क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भी बरोज़े क़ियामत मुसल्मानों में सुल्ह़ करवाएगा।"

(المستدرک، الحدیث:۸۷۵۸، ج۵، ص۷۹۵)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़दीसे मज़्कूर मुसल्मानों के दरमियान सुल्ह़ करवाने की सुन्नते इलाहिय्यह और सुल्ह़ की तरग़ीब दिलाने की सुन्नते मुस-त़-फ़विय्या की मुक़द्दस व मुश्कबार ख़ुश्बूओं से महक रही है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ करे हम भी इस सुन्नते ख़ुश्बूदार से अपने ज़ाहिर व बात़िन को मुअ़त्त़र व मुअ़म्बर कर के इस्लामी भाइयों में भाई चा-रगी की भरपूर सअ़्य करें और अपने माह़ोल को सुल्ह़ व ख़ैर की ख़ुश्बूओं से महक्ता गुलज़ार बल्कि मदीने का बाग़े सदा बहार बना दें। चुनान्चे,

सुल्ह़ ख़ूब और बेहतर है :

हमारे प्यारे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने सुल्ह़ की तरग़ीब दिलाते हुए इर्शाद फ़रमाया है :

وَالصُّلْحُ خَيْرٌ ؕ وَ اُحْضِرَتِ الْاَنْفُسُ الشُّحَّ ؕ (پ۵، النساء:۱۲۸) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और सुल्ह़ ख़ूब है, और दिल लालच के फन्दे में हैं।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बा'ज़ अवक़ात फ़रीक़ैन के निज़ाअ़ को ख़त्म कर के सुल्ह़ करवाना बहुत ज़ियादा सूद मन्द होता है। क्यूं कि फ़रीक़ैन में से एक के ह़क़ में फ़ैसला हो जाने की सूरत में दूसरे के दिल में अ़दावत व कीना और बुग़्ज़ व ह़सद वग़ैरा जैसी बीमारियां जड़ पकड़ लेती हैं। जिन का इज़ाला आसानी से मुम्किन नहीं होता। चुनान्चे,

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाया करते कि फ़रीक़ैने मुक़द्दमा को वापस कर दो ताकि वोह आपस में सुल्ह़ कर लें क्यूं कि मुआ-मले का फ़ैसला कर देना लोगों के दिलों में नफ़रत पैदा करता है।"

(السنن الکبری للبیهقي، کتاب الصلح، باب ماجاء فی التحلل...إلخ، الحدیث:۱۱۳۶۰، ج۶، ص۱۰۹)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मुश्तबा उमूर में क़ाज़ी के लिये मुनासिब येह है कि फ़ैसला करने में जल्दी न करे बल्कि एक दो मरतबा फ़रीक़ैन को वापस लौटा दे ताकि वोह ख़ूब ग़ौरो फ़िक्र कर के आपस में सुल्ह़ कर लें क्यूं कि सुल्ह़ से आपस में प्यार व मह़ब्बत की फ़ज़ा क़ाइम रहती है और दिलों में बुग़्ज़ व कीना की कैफ़िय्यत पैदा नहीं होती और अगर फ़रीक़ैन सुल्ह़ पर राज़ी न हों तो क़ाज़ी को चाहिये कि ह़क़ के मुवाफ़िक़ फ़ैसला कर दे।

(المبسوط للسرخسی، کتاب الصلح، ج۱۰، ص۱۴۸ ملتقطاً)

मियां बीवी में सुल्ह़ करा दीजिये :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर ऐसी नाचाक़ी ज़ौजैन में पैदा हो कि जिस का ह़ल वोह आपस में तै़ न कर सकें तो मर्द को त़लाक़ में जल्द बाज़ी से काम लेना चाहिये न औ़रत को खुल्अ़ में। और इन्हें कोशिश करनी चाहिये कि झगड़े के ह़ल के लिये कोर्ट कचह्‌री जाना पड़े न किसी आ़म मजलिस में। बल्कि अपने अ़ज़ीज़ो

अक़ारिब में से ऐसे दो अफ़राद का इन्तिख़ाब करें कि जो शरीअ़त की सूझ बूझ भी रखते हों और उन के झगड़े को ख़ुश उस्लूबी से ह़ल कर के उन के दरमियान सुल्ह़ करा दें। चुनान्चे,

इर्शादे बारी तआ़ला है :

وَ اِنْ خِفْتُمْ شِقَاقَ بَیْنِهِمَا فَابْعَثُوْا حَكَمًا مِّنْ اَهْلِهٖ وَ حَكَمًا مِّنْ اَهْلِهَا ۚ اِنْ یُّرِیْدَاۤ اِصْلَاحًا یُّوَفِّقِ اللّٰهُ بَیْنَهُمَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِیْمًا خَبِیْرًا ۳۵

(پ۵، النساء:۳۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और अगर तुम को मियां बीबी के झगड़े का ख़ौफ़ हो तो एक पन्च मर्द वालों की त़रफ़ से भेजो और एक पन्च औ़रत वालों की त़रफ़ से येह दोनों अगर सुल्ह़ कराना चाहेंगे तो **अल्लाह** उन में मेल कर देगा बेशक **अल्लाह** जानने वाला ख़बरदार है।

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान में इस आयते मुबा-रका की शर्ह़ में फ़रमाते हैं कि इस से मा'लूम हुवा कि शोहर और बीवी में सुल्ह़ करा देना बेहतरीन इ़बादत है। ऐसे ही मुसल्मानों में सुल्ह़ कराना बहुत अच्छा है।

(नूरुल इ़रफ़ान, पारह : 5, अन्निसाअ : 35)

नफ़्ली सलात व ख़ैरात से अफ़्ज़ल काम :

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना के मत़्बूआ़ 40 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले, **"ना चाक़ियों का इ़लाज"** सफ़ह़ा 35 ता 37 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते

इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन **इस्लाहे़ बैनन्नास** (या'नी लोगों के दरमियान सुल्ह़ कराने के हुक्म) के मुत़ाबिक़ अ़मल करना एक इन्तिहाई अ़ज़ीम म-दनी काम है। इस से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इतना ख़ुश होता है कि नफ़्ली नमाज़, रोज़े और स-दक़ा देने से भी नहीं होता। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि **इमामुन्नबिय्यी-न वल मुर-सलीन, सय्यिदुल मुर्शिदी-न वस्सालिह़ीन** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने (सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से) इर्शाद फ़रमाया : "क्या तुम्हें नमाज़, रोज़े, और स-दक़ा देने से अफ़्ज़ल काम की ख़बर न दूं ?" सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن ने अ़र्ज़ की : "क्यूं नहीं (ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم)।" फ़रमाया : "वोह काम सुल्ह़ करवा देना है और फ़साद फैलाना तो (दीन को) मूंडने वाला (काम) है।"

(مسند احمد بن حنبل، الحدیث:۲۷۵۷۸، ج۱۰، ص۴۲۲)

अच्छा इस्लामी भाई कौन ?

देखा आप ने ! इस्लामी भाइयों में सुल्ह़ करवा देना कैसा फ़ज़ीलत व अ़-ज़मत वाला काम है। तो वोह कितना अच्छा और भला इस्लामी भाई है जो अपने छोटों पर शफ़्क़त और अपने बड़ों की इ़ज़्ज़त हम मशरब दोस्तों की मुरुव्वत व हु़रमत और तमाम इस्लामी भाइयों की भलाई और ख़ैर ख़्वाही के त़र्ज़े अ़मल को

इख़्तियार करते हुए अपने पाकीज़ा किरदार और नेक गुफ़्तार से मुसल्मानों में से शर व फ़साद को ख़त्म करने के लिये हमेशा कोशां रहे। चुनान्चे,

सुल्ह़ की एक अ़जीब ह़िकायत

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि **अल्लाह** के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नसीह़त निशान है कि एक शख़्स ने ज़मीन ख़रीदी तो उसे ज़मीन में से सोने से भरा हुवा एक गढ़ा मिला। वोह ज़मीन बेचने वाले शख़्स के पास गया और बोला कि येह सोना उस का है क्यूं कि उस ने तो सिर्फ़ ज़मीन ख़रीदी थी सोना नहीं। तो ज़मीन बेचने वाले ने जवाब दिया कि येह सोना अब मेरा नहीं क्यूं कि मैं ने ज़मीन और जो कुछ उस में था सब कुछ बेच दिया था। जब दोनों सोना रखने पर आमादा न हुए तो उन्हों ने एक शख़्स को अपने इस अ़जीब झगड़े का फ़ैसला करने के लिये सालिस बनाया, उस ने उन दोनों से पूछा : क्या तुम्हारी कोई औलाद है ? एक बोला मेरा एक लड़का है और दूसरे ने कहा मेरी एक बेटी है। तो सालिस ने कहा तुम्हारे झगड़े का ह़ल येह है कि तुम दोनों अपने बच्चों की एक दूसरे से शादी कर दो और येह सारा सोना उन दोनों को दे दो। (صحیح مسلم، کتاب الاقضیۃ، باب استحباب اصلاح الحاکم بین الخصمین، الحدیث: ۱۷۲۱، ص۹۴۷)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾5﴿ फ़रीक़ैन से बराबरी का सुलूक कीजिये

जो अहलिय्यत रखते हुए फ़ैसला करे, अ़द्लो इन्साफ़ के तक़ाज़े ज़रूर पूरे करे जैसा कि कुरआने पाक का हुक्म है :

وَ اِذَا حَكَمْتُمْ بَيْنَ النَّاسِ اَنْ تَحْكُمُوْا بِالْعَدْلِ ؕ (پ۵، النساء:۵۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और येह कि जब तुम लोगों में फ़ैसला करो तो इन्साफ़ के साथ करो।

सदरुल अफ़ाज़िल, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى "ख़ज़ाइनुल इरफ़ान" में इस आयते मुबा-रका की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं कि ह़ाकिम (और फ़ैसला करने वाले) को चाहिये कि पांच बातों में फ़रीक़ैन के साथ बराबर का सुलूक करे : (1).......अपने पास आने के लिये जैसे एक को मौक़अ़ दे वैसे दूसरे को भी दे। (2).......निशस्त (या'नी बैठने की जगह) दोनों को एक जैसी दे। (3).......दोनों की त़रफ़ बराबर मु-तवज्जेह रहे। (4)......कलाम सुनने में हर एक के साथ एक ही त़रीक़ा रखे। (5)......फ़ैसला देने में ह़क़ की रिआ़यत करे, जिस का दूसरे पर ह़क़ हो पूरा पूरा दिलाए।

फ़ारूक़े आ'ज़म की सालिस को हिदायत :

इमाम शअ़बी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर और ह़ज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا के दरमियान किसी मुआ़-मले में शकर

रन्जी थी। अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने मश्वरा फ़रमाया कि किसी को सालिस मुक़र्रर कर लेते हैं। चुनान्चे, दोनों ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को सालिस मुक़र्रर करने पर रिज़ा मन्द हो कर उन के पास उन के घर तशरीफ़ लाए। जब अमीरुल मुअमिनीन सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने उन से फ़रमाया कि हम आप के पास इस लिये आए हैं कि आप हम में फ़ैसला कर दें। सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की ख़िदमत में उ़मूमन ऐसा जो मुआ़-मला भी पेश होता वोह अपने घर में ही इस का फ़ैसला फ़रमाया करते। चुनान्चे, जब दोनों ह़ज़रात सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के घर में दाख़िल हुए तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने अपनी मख़्सूस निशस्त से हट कर अ़र्ज़ की : अमीरुल मुअमिनीन यहां तशरीफ़ लाइये। तो अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने इर्शाद फ़रमाया : "येह तुम्हारा पहला ज़ुल्म है जो तुम ने फ़ैसले में किया है। मैं अपने फ़रीक़ के साथ बैठूंगा। चुनान्चे, दोनों ह़ज़रात ह़ज़रते ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के सामने बैठ गए और सारी सूरते ह़ाल बयान कर दी तो उन्हों ने फ़ैसला सुनाते हुए फ़रमाया कि उबय्य बिन का'ब को ह़क़ ह़ासिल है कि वोह अमीरुल मुअमिनीन से क़सम लें और अगर चाहें तो मुआ़फ़ कर दें मगर ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने क़सम खा ली और फिर सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से क़सम ली कि वोह उस वक़्त तक किसी झगड़े का फ़ैसला न करेंगे

जब तक कि उन के नज़्दीक ह़ज़रते उ़मर और दूसरा मुसल्मान बराबर न हो जाए। या'नी जो शख़्स मुद्दई और मुद्दआ़ अ़लैह में इस क़िस्म की तफ़्रीक़ करे वोह फ़ैसले का अहल नहीं।

(تاریخ مدینۃ دمشق، الرقم ۲۲۳۱ زید بن ثابت، ج۱۹، ص۳۱۹)

﴾6﴿ हर फ़रीक़ की बात तवज्जोह से सुनिये

आदाबे फ़ैसला में से येह भी है कि फ़रीक़ैन में से जिस त़रह़ एक की बात सुनी जाए तो उसी त़रह़ बड़ी तवज्जोह से दूसरे की बात भी सुनी जाए। चुनान्चे,

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं कि मुझे हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने यमन की त़रफ़ क़ाज़ी बना कर भेजा, तो मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप मुझे भेज तो रहे हैं मगर मैं कम उ़म्र हूं और मुझे फ़ैसला करने का इ़ल्म भी नहीं है। (लिहाज़ा इस अम्र में मेरी इआ़नत भी फ़रमाइये !) तो सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे दिल को हिदायत देगा और तुम्हारी ज़बान को साबित रखेगा। (ध्यान रखना कि) जब फ़रीक़ैन तुम्हारे सामने बैठ जाएं तो उस वक़्त तक फ़ैसला न करना जब तक कि दोनों की बातें न सुन लो। कि येह त़रीक़ए कार तुम्हारे लिये फ़ैसले को वाज़ेह़ कर देगा।"

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيم फ़रमाते हैं कि इस के बा'द कभी मुझे किसी फ़ैसले में तरद्दुद न हुवा।

(ابو داود، کتاب القضاء، باب کیف القضاء، الحدیث:۳۵۸۲، ج۳،ص۴۲۳)

﴾7﴿ फ़ैसले में जल्द बाज़ी न कीजिये

आदाबे फ़ैसला में से अहम तरीन येह है कि फ़ैसले में जल्दी न करे। क्यूं कि जल्द बाज़ी का अन्जाम बुरा होता है। चुनान्चे,

सरवरे काएनात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हिदायत निशान है कि किसी काम में तवक्कुफ़ करना (जल्द बाज़ी से काम न लेना) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से है और जल्द बाज़ी शैत़ान की त़रफ़ से है। (سنن الترمذی، کتاب البر والصلة، باب ما جاء فی التأنی والعجلة، الحدیث:۲۰۱۹، ج۳، ص۴۰۷)

सह़ाबिये रसूल की ह़िकायत :

इसी त़रह़ मरवी है कि मदीनए मुनव्वरह में दो शख़्स बाबे किन्दा की जानिब से दाख़िल हुए। उस वक़्त कुछ अन्सार दाएरे की सूरत में तशरीफ़ फ़रमा थे, जिन में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मस्ऊ़द अन्सारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ भी शामिल थे। चुनान्चे, उन दोनों में से एक ने अन्सार की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की, कि क्या कोई शख़्स हमारे झगड़े का फ़ैसला कर देगा ? तो एक शख़्स फ़ौरन बोला हां इधर मेरे पास आओ। तो उस की येह बात सुन कर

सय्यिदुना अबू मस्ऊ़द अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कंकरियों की मुठ्ठी भर कर उसे मारी और फ़रमाया कि (फ़ैसले में जल्दी करने से) रुक जाओ। क्यूं कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़ैसले में जल्द बाज़ी को ना पसन्द फ़रमाते थे।

(السنن الکبریٰ للبیھقی، کتاب آداب القاضی، باب کراھیۃ طلب الامارۃ والقضاء...... الخ، الحدیث:۲۰۲۵۲، ج۱۰، ص۱۷۳)

﴾8﴿ ख़ूब तह़क़ीक़ से काम लीजिये

पहले ख़ूब तह़क़ीक़ से काम ले, फिर जो ह़क़ ज़ाहिर हो उसी पर फ़ैसला दे। चुनान्चे, रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है कि जब क़ाज़ी फ़ैसला करे तो ख़ूब तह़क़ीक़ कर लिया करे, (अगर तह़क़ीक़ के बा'द) उस ने दुरुस्त फ़ैसला किया तो उस के लिये दो अज्र हैं और अगर उस से (फ़ैसले में) कोई ख़त़ा हो जाए तो उस के लिये एक अज्र है।

(صحیح مسلم، کتاب الاقضیہ، باب بیان اجر الحاکم اذا اجتھد فاصاب او اخطا، الحدیث: ۱۷۱۶، ص۹۴۴)

दोस्त के क़ातिल :

एक शख़्स अपने चन्द दोस्तों के साथ किसी सफ़र पर गया, उस के दोस्त तो वापस लौट आए मगर वोह वापस न आया तो उस के घर वालों ने उस के दोस्तों पर इल्ज़ाम लगाया कि इन्हों ने उसे क़त्ल कर दिया है। जब मुआ़-मला क़ाज़ी शुरैह़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पास गया तो आप ने पूछा क्या क़त्ल का कोई गवाह है ? चूंकि, क़त्ल का कोई गवाह न था लिहाज़ा वोह इस मुआ़-मले को अमीरुल मुअमिनीन

हज़्रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم की बारगाह में ले गए और सारी बात अर्ज़ कर दी कि क़ाज़ी शुरैह رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उन से येह येह कहा है। उन की सारी बातें सुन कर अमीरुल मुअमिनीन हज़्रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने क़ाज़ी शुरैह رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के तर्ज़े अमल पर पहले बतौरे कहावत येह शे'र पढ़ा :

اَوْرَدَهَا سَعْدٌ وَسَعْدٌ مُشْتَمِلٌ

يَا سَعْدُ لَا تُرْوٰى بِهَا ذَاكَ الْاِبِلُ

तरजमा : सा'द चादर में ऊंटों को कूंएं पर लाया और खुद चादर तान कर सो गया (ऐ काश ! कोई सा'द को बताए कि) ऐ सा'द ! ऊंटों को इस तरह पानी नहीं पिलाया जाता।

इस के बा'द आप ने एक और अ-रबी कहावत कही : اِنَّ اَهْوَنَ السَّقْيِ التَّشْرِيْعُ۔ । या'नी जानवरों को पानी पिलाना हो तो सब से आसान तरीक़ा येह है कि उन्हें किसी घाट वग़ैरा से पानी पिलाया जाए।

फिर आप ने उस शख़्स के तमाम दोस्तों को जुदा जुदा कर के बुलाया और उन से मुख़्तलिफ़ सुवालात किये तो उन के जवाबात में पहले तो इख़्तिलाफ़ पाया गया और बिल आख़िर उन्हों ने तस्लीम कर लिया कि हां वाक़ेई उन्हों ने उस शख़्स को क़त्ल कर दिया है। चुनान्चे, अमीरुल मुअमिनीन ने फ़ैसला फ़रमाया कि बतौरे क़िसास इन सब को भी क़त्ल कर दिया जाए। (السنن الكبرىٰ للبيهقى، كتاب آداب القاضى، باب التثبت فى الحكم الحديث: ۲۰۲۷۴، ج ۱۰، ص ۱۷۹)

इमाम बैहक़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى इस रिवायत को नक़्ल करने के बा'द अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم की बयान कर्दा दोनों कहावतों की वज़ाह़त करते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं कि आप ने जो शे'र पढ़ा उस की अस्ल येह है कि एक शख़्स अपने ऊंटों को पानी पिलाने के लिये एक ऐसी जगह लाया जहां से वोह ख़ुद पानी नहीं पी सकते थे जब तक कि कोई उस जगह से पानी निकाल कर उन्हें न पिलाता (म-सलन कूंआं वग़ैरा) और फिर वोह शख़्स ख़ुद चादर तान कर सो गया और ऊंटों को पानी पीने के लिये वैसे ही छोड़ दिया। तो ऐसे शख़्स को शाइर ने नसीह़त की है कि ऐ फ़ुलां ! तुम्हारे सो जाने से ऊंट सैराब न होंगे। और दूसरी कहावत में इर्शाद फ़रमाया कि पानी पिलाने का आसान त़रीक़ा येही है कि हौज़ वग़ैरा जैसी जगहों पर पानी पिलाया जाए जहां मशक़्क़त न उठाना पड़े और जानवर ख़ुद ही पानी पी लें।

या'नी आप ने क़ाज़ी शुरैह़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से इर्शाद फ़रमाया कि ऐ शुरैह़ ! मुआ़-मले की ह़क़ीक़त जानने के लिये ख़ूब तह़क़ीक़ से काम लेते और उस में ख़ूब ग़ौरो फ़िक्र कर के उस शख़्स के बारे में जानने की कोशिश करते कि उस के साथ दर ह़क़ीक़त क्या मुआ़-मला पेश आया मगर उन्हों ने आसान रास्ता अपनाया और तह़क़ीक़ को मुश्किल जानते हुए सिर्फ़ गवाही को ही काफ़ी जाना।

(المرجع السابق)

मस्अले का जवाब कई दिन बा'द दिया :

एक शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना सह़नून मालिकी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى[1] की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और एक मस्अला पूछा। मगर आप ने उसे फ़ौरन जवाब न दिया, वोह शख़्स लगातार ह़ाज़िरे ख़िदमत होता रहा और आख़िर तीसरे दिन अ़र्ज़ करने लगा : "जनाब ! आज तीसरा दिन है।" तो आप ने फ़रमाया : "ऐ मेरे दोस्त ! मैं क्या कर सकता हूं ? तुम्हारा मस्अला बड़ा पेचीदा है। इस के बारे में बहुत से अक़्वाल मरवी हैं और मैं ह़ैरान हूं कि किस क़ौल को तरजीह़ दूं।" उस ने अ़र्ज़ की : "ह़ज़रत ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को सलामती व सिह़ह़त अ़ता फ़रमाए ! आप तो हर पेचीदा मस्अला ह़ल करने वाले हैं।" ह़ज़रते सह़नून رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ नौ जवान ! ऐसी बातें न करो। क्यूं कि मैं तुम्हारी

1.....आप का अस्ल नाम अबू सईद अ़ब्दुस्सलाम बिन सईद तनूख़ी (अल मु-तवफ़्फ़ा 240 सि.हि.) है और सह़नून लक़ब है। आप ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ख़िदमत में रह कर बीस साल तक इ़ल्मी ख़ज़ाने जम्अ़ करने वाले ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन क़ासिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से इ़ल्मी फ़ैज़ान ह़ासिल किया। और फिर मग़रिब में ह़ज़रते इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के मज़हब को फैलाने में अहम किरदार अदा किया। (ادب المفتی والمستفتی لابن صلاح، ص۱۵) आप क़ीरवान के क़ाज़ी भी थे। बहुत ज़ियादा अ़क़्ल मन्द व दाना इन्सान थे, इन्तिहाई मुत्तक़ी व परहेज़ गार थे और अ़वाम में आप की जूदो सख़ावत का शोहरा था। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाया करते कि दुन्या को चाहने वाला इन्सान एक अन्धे की मिस्ल होता है और इ़ल्म की रोशनी भी उसे कोई फ़ाएदा नहीं पहुंचा सकती। (سیر اعلام النبلاء، ج۱۰، ص۷۱)

ख़ातिर अपने जिस्म को आग में नहीं झोंक सकता। जो जानता नहीं उस से ज़ियादा कोशिश भी नहीं कर सकता। अगर सब्र करो तो मुझे उम्मीद है कि तुम्हारे मस्अले का कोई ह़ल निकल आएगा और अगर मेरे इलावा किसी दूसरे के पास इस मस्अले के ह़ल के लिये जाना चाहते हो तो जाओ, चले जाओ वोह तुम्हें एक लम्ह़ा में इस का ह़ल बता देगा।" तो उस ने फ़ौरन अ़र्ज़ की : "जनाब ! मैं तो आप की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा था, मुझे इस मस्अले के ह़ल के लिये किसी दूसरे के पास जाने की ज़रूरत नहीं।" पस आप ने उसे सब्र की तल्क़ीन की और फिर उस का मस्अला भी ह़ल कर दिया। (ادب المفتی والمستفتی لابن صلاح، ص۱۵)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस रिवायत से हमें दो म-दनी फूल मिलते हैं। एक मस्अला पूछने वाले के लिये और दूसरा मस्अले का ह़ल बताने वाले के लिये है :

मस्अला पूछने वाले के लिये म-दनी फूल येह है कि जब कोई मस्अला दरपेश हो तो किसी अहल इस्लामी भाई की ख़िदमत में ही उस के ह़ल के लिये ह़ाज़िर हो और ग़ैर अहल के पास कभी न जाए। और ह़ज़रते सह़नून मालिकी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى के अ़मल से **ह़ल बताने वाले के लिये येह म-दनी फूल मिलता है** कि मस्अला किसी भी नौइ़यत का हो कभी भी जल्द बाज़ी से काम नहीं लेना चाहिये और ह़क़ बात जानने के लिये उस के तमाम जुज़्इय्यात पर ख़ूब ग़ौरो फ़िक्र करना चाहिये। कहीं ग़लत़ ह़ल बताने की वजह से जहन्नम की आग का ह़क़दार न होना पड़े।

﴾9﴿ ग़ुस्से में फ़ैसला न कीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! किसी सबब से त़बीअ़त बेचैन और मुज़्त़रिब होने या ग़ुस्सा वग़ैरा की किसी भी ऐसी ह़ालत में फ़ैसले से गुरेज़ करना चाहिये जो ह़क़ व नाह़क़ के दरमियान रुकावट बन सकती हो। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बकरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने बेटे ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को इर्शाद फ़रमाया कि सजिस्तान के क़ाज़ी उ़बैदुल्लाह बिन अबी बकरह को मक्तूब लिखो कि कभी भी ग़ुस्से की ह़ालत में फ़ैसला न करना क्यूं कि मैं ने साह़िबे ह़िल्मो ह़िकम, रसूले **मुह़्तशम** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को येह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : "कोई शख़्स दो बन्दों के दरमियान ग़ुस्से की ह़ालत में फ़ैसला न करे।"

(صحیح مسلم، کتاب الاقضیۃ، باب کراھۃ القاضی وھو غضبان، الحدیث:۱۷۱۷، ص۹۴۵)

﴾10﴿ किसी फ़रीक़ का ह़क़ ज़ाएअ़ न हो

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! फ़ैसला करते हुए हमेशा याद रखिये कि किसी फ़रीक़ का ह़क़ ज़ाएअ़ न हो। हमेशा अ़द्ल का दामन थामे रहें कि अ़द्ल से काम लेना जन्नत में ले जाने वाला और फ़ैसले में ना इन्साफ़ी करना जहन्नम में ले जाने वाला काम है। चुनान्चे,

ह़ज़रते बुरीदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि आक़ाए मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "क़ाज़ी (या'नी फ़ैसला करने वाले) तीन त़रह़ के होते हैं : एक जन्नती और दो दोज़ख़ी। पस जन्नती वोह है जो ह़क़ पहचान कर उस के मुत़ाबिक़ फ़ैसला करे

और जो क़ाज़ी ह़क़ जान ले मगर फ़ैसले में ज़ुल्म करे वोह दोज़ख़ी है और जो जहालत पर (या'नी ह़क़ व नाह़क़ की तह़क़ीक़ के बिग़ैर) लोगों के फ़ैसले करे वोह भी दोज़ख़ी है।" (سنن ابی داود، کتاب الاقضیة، باب فی القاضی یخطئ، الحدیث:۳۵۷۳، ص۱۸ ۴)

एक रिवायत में है कि रोज़े क़ियामत तमाम ह़ाकिमों को लाया जाएगा, उन में आ़दिल भी होंगे और ज़ालिम भी। यहां तक कि जब वोह सब पुल सिरात़ पर खड़े हो जाएंगे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : "तुम में से बा'ज़ मेरे मह़बूब हैं।" (वोही ब ह़िफ़ाज़त पुल सिरात़ से गुज़र पाएंगे) और जो ह़ाकिम अपने फ़ैसले में ज़ुल्म करने वाला, रिश्वत लेने वाला या मुक़द्दमे के फ़रीक़ैन में से किसी एक की बात ज़ियादा तवज्जोह और ध्यान से सुनने वाला होगा वोह सत्तर साल तक दोज़ख़ की गहराई में गिरता चला जाएगा। उस के बा'द ऐसे ह़ाकिम को लाया जाएगा जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मुक़र्रर कर्दा सज़ाओं से ज़ियादा किसी को सज़ा दी होगी और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से दरयाफ़्त फ़रमाएगा : "لِمَ ضَرَبْتَ فَوْقَ مَا اَمَرْتُكَ؟ तूने मेरे हुक्म से ज़ाइद क्यूं सज़ा दी ?" अ़र्ज़ करेगा : "غَضِبْتُ لَكَ۔" ऐ बारी तआ़ला ! मुझे तेरी ख़ात़िर गुस्सा आ गया था। तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : "क्या तेरा गुस्सा मेरे ग़ज़ब से ज़ियादा सख़्त था ?" उस के बा'द एक ऐसे शख़्स को लाया जाएगा जिस ने **हुदूदुल्लाह** के निफ़ाज़ में कमी की होगी और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से पूछेगा : "ऐ मेरे बन्दे ! لِمَ قَصَّرْتَ؟ तूने

सज़ा में कमी क्यूं की ? अ़र्ज़ करेगा : “ऐ परवर्द गार ! मुझे उस पर रह़्म आ गया था।” तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : “क्या तेरी रह़मत मेरी रह़मत से बढ़ कर थी ?”

(جامع الاحادیث للسیوطی، الحدیث: ۲۸۲۱۷، ج۹، ص۲۳۴)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने तफ़्सीरे कबीर में एक ह़दीसे पाक नक़्ल फ़रमाई है कि “क़ियामत के दिन एक ऐसे ह़ाकिम को बारगाहे ख़ुदा वन्दी में पेश किया जाएगा जिस ने ह़द में एक कोड़े की कमी की होगी। उस से पूछा जाएगा : “لِمَ فَعَلْتَ ذَاكَ؟” तूने ऐसा क्यूं किया ? वोह अ़र्ज़ करेगा : “رَحْمَةً لِّعِبَادِكَ” तेरे बन्दों पर रह़मत और शफ़क़त करने के लिये। तो उसे कहा जाएगा : “اَنْتَ اَرْحَمُ بِهِمْ مِنِّیْ؟” क्या तू मुझ से ज़ियादा उन पर रह़्म करने वाला है ? فَيُؤْمَرُ بِهٖ اِلَى النَّارِ पस उसे दोज़ख़ में फेंक देने का हुक्म दिया जाएगा। फिर ऐसे ह़ाकिम को बारगाहे इलाही में पेश किया जाएगा जिस ने मुक़र्ररा ह़द से एक कोड़ा ज़ियादा मारा होगा। उस से इस की वजह पूछी जाएगी : “لِمَ فَعَلْتَ ذٰلِكَ؟” तू ने ऐसा क्यूं किया ? तो अ़र्ज़ करेगा : “لِيَنْتَهُوْا عَنْ مَعَاصِيْكَ” ऐ बारी तआ़ला ! मैं ने ऐसा इस लिये किया ताकि लोग तेरी ना फ़रमानी से बाज़ आ जाएं। तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : “اَنْتَ اَحْكَمُ بِهٖ مِنِّی؟” क्या तू मुझ से बेहतर हुक्म करने वाला है ? فَيُؤْمَرُ بِهٖ اِلَى النَّارِ फिर उसे भी आग में फेंके जाने का हुक्म दिया जाएगा।

(التفسیر الکبیر للامام الفخر الرازی، سورۃ النور، تحت الایۃ:۲، الجزء الثالث والعشرون، ج۸، ص۳۱۷)

दारुल इफ़्ता से रुजूअ़ करने का मश्वरा :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कुछ मुआ़-मलात निजी नौइय्यत के भी होते हैं अगर आप के पास ऐसे मुआ़-मलात आएं जिन का तअ़ल्लुक़ घरेलू उमूर, त़लाक़, जाएदाद या कारोबार वग़ैरा से हो तो ऐसी सूरत में उन फ़रीक़ैन की उ़-लमाए अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की त़रफ़ राहनुमाई फ़रमा दें कि येह उन फ़ैसलों की नज़ाकत और अन्दाज़ को बेहतर समझते हैं।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه علٰی اِحْسَانِهٖ وَ بِفَضْلِ رَسُوْلِهٖ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "**दा'वते इस्लामी**" नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्नो ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मु-तअ़द्दद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन के तह़्त बहुत से शो'बाजात ख़िदमते दीन के लिये कोशां हैं। इन में से एक शो'बा "**दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत**" भी है, येह **दा'वते इस्लामी** के उ़-लमा व मुफ़्तियाने किराम كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی पर मुश्तमिल है और इस का काम अ़वामुन्नास की शर-ई़ राहनुमाई करना है।

हां ! अगर आप के पास इस्लामी भाइयों के आपस के तनाज़ुआ़त व इख़्तिलाफ़ात के मुआ़-मलात आएं जिन का तअ़ल्लुक़ तन्ज़ीमी उमूर से हो तो ह़त्तल मक्दूर त़-रफ़ैन की सुन कर सुल्ह़ करवा दें बशर्ते़ कि सुल्ह़ में किसी की ऐसी ह़क़ त-लफ़ी न हो कि जिस का अदा

करना ज़रूरी हो । वरना अहलिय्यत हो तो ह़क़ बात पर फ़ैसले की तरकीब बना दीजिये ।

"अमीरे अहले सुन्नत" के दस ह़ुरूफ़ की निस्बत से फ़ैसला करने के दस म-दनी फूल

﴾1﴿ उ़-लमाए किराम की ख़िदमत में ह़ाज़िर हों ।

﴾2﴿ जो अहल हो वोही फ़ैसला करे ।

﴾3﴿ ह़कम बनने की ख़्वाहिश नहीं करना चाहिये ।

﴾4﴿ फ़रीक़ैन में सुल्ह़ करा दीजिये ।

﴾5﴿ फ़रीक़ैन से बराबरी का सुलूक कीजिये ।

﴾6﴿ हर फ़रीक़ की बात तवज्जोह से सुनिये ।

﴾7﴿ फ़ैसले में जल्द बाज़ी न कीजिये ।

﴾8﴿ ख़ूब तह़क़ीक़ से काम लीजिये ।

﴾9﴿ गुस्से में फ़ैसला न कीजिये ।

﴾10﴿ किसी फ़रीक़ का ह़क़ ज़ाएअ़ न हो ।

अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ का फ़ैसला करने का अन्दाज़

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ हमारे शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ ने इस्लामी भाइयों के दरमियान पैदा होने वाली शकर रन्जियों में कई बार फ़ैसले कराए हैं । इस सिलसिले में आप دامت برکاتہم العالیہ का मुबारक अन्दाज़ यूं देखा गया है :

सुल्ह़ व फ़ैसला से पहले आप दुआ़ कर के **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से फ़रेबे नफ़्स व शैत़ान के ख़िलाफ़ इस्तिआ़नत करते हैं। फिर कमाले ज़ब्त़ से फ़रीक़ैन का मौक़िफ़ समाअ़त करते हैं। आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की आ़दते मुबा-रका है कि हरगिज़ किसी एक की त़रफ़ झुकाव इख़्तियार नहीं फ़रमाते, सामने कैसा ही ज़िम्मादार या क़रीबी इस्लामी भाई हो इन्साफ़ के दामन को हाथ से नहीं जाने देते और जो ह़क़ हो उसी पर फ़ैसला सादिर फ़रमाते हैं।

आप की ह़त्तल इम्कान येही कोशिश होती है कि मुआ़-मला सुल्ह़ व सफ़ाई से तै़ पा जाए चुनान्चे बारहा ऐसा हुवा कि दो फ़रीक़ आपस में ग़म व ग़ुस्सा लिये बारगाहे अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه में ह़ाज़िर हुए और अपने अपने मौक़िफ़ व मुद्दआ़ पर ज़िद और सख़्ती का मुज़ा-हरा किया मगर जब अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अपने दिलकश अन्दाज़, ह़िक्मते अ़-मली और ह़ुस्ने तदबीर से सुल्ह़ की ब-र-कतें, ग़ुस्से और इस के सबब पैदा होने वाले बुग़्ज़ व कीना वग़ैरा के नुक़्सानात, क़त़ए तअ़ल्लुक़ी की नुह़ूसतें, मुआ़फ़ करने और मुसल्मानों के ऐ़ब छुपाने के फ़ज़ाइल, ग़ीबत व तोहमत की तबाह कारियां और इन से बचने के त़रीक़े, ज़ुल्म पर सब्र के फ़वाइद, आपस की मह़ब्बत और ह़ुक़ूक़ुल इ़बाद की बजा आ-वरी की तरग़ीबात इर्शाद फ़रमाईं तो उन्हें सुन कर फ़रीक़ैन अपने मौक़िफ़ से दस्त बरदार हो कर सुल्ह़ पर आमादा हो गए और जज़्बाते तअस्सुर से रो रो कर एक दूसरे से मुआ़फ़ी मांगते हुए गले मिल गए। चुनान्चे,

यूरोपियन ममालिक के एक शहर के तन्ज़ीमी ज़िम्मादार इस्लामी भाइयों में शकर रन्जियां चल रही थीं। सुल्ह़ की कोई मज़बूत़ सूरत नहीं बन पाती थी और दा'वते इस्लामी का म-दनी काम बहुत मु-तअस्सिर था। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की इस त़रफ़ तवज्जोह दिलाई गई तो आप ने एक मक्तूब दिया। चुनान्चे, मजलिसे बैरूने मुल्क के एक ज़िम्मादार इस्लामी भाई वोह मक्तूब ले कर बाबुल मदीना कराची से सफ़र कर के र-जबुल मुरज्जब 1427 सि. हि. में मत़्लूबा शहर पहुंचे। इस्लामी भाइयों को जम्अ़ कर के "मक्तूबे अ़त्त़ार" पढ़ कर सुनाया गया, सुन कर सारे बे क़रार व अश्कबार हो गए, रो रो कर एक दूसरे से मुआ़फ़ियां मांग लीं और सब ने सुल्ह़ नामा पर दस्त ख़त़ कर दिये। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ वहां अब अम्न है, दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों और म-दनी क़ाफ़िलों में तरक़्क़ी की इत्त़िलाआ़त हैं। येह मक्तूब आख़िरत की याद दिलाने वाला, ख़ौफ़े ख़ुदा में तड़पाने वाला और सुल्ह़ व सफ़ाई पर उभारने वाला है। म-दनी आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की दुख्यारी उम्मत के अ़ज़ीम तर मफ़ाद की ख़ात़िर मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अ़त्त़ारिय्या की जानिब से इस इन्क़िलाबी मक्तूबे अ़त्त़ार को ज़रूरतन तरमीम के साथ "**ना चाक़ियों का इलाज**" के नाम से एक रिसाला मक-त-बतुल मदीना से पेश किया गया है। जहां भी ज़ाती ना राज़ियों के बाइ़स मुसल्मानों में दो फ़रीक़ बन गए हों येह रिसाला पढ़ कर सुना दिया जाए, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ख़ाइफ़ीन के जिगर पाश पाश हो जाएंगे और वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डर कर सुल्ह़ कर लेंगे।

इस रिसाले में आयात व रिवायात और ह़िकायात की रोशनी में चप-कलिशों और ज़ाती रन्जिशों के नुक़्सानात का वोह इ़ब्रत नाक बयान

है जो कि नर्म दिलों के लिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मरहमे जराह़त और सख़्त दिलों के लिये ताज़ियानए इब्रत साबित होगा। जो इब्रत ह़ासिल करे करे और जो न करे न करे, नसीब अपना अपना !!!!!!

आइये इस रिसाले से चन्द इब्तिदाई और आख़िरी सुतूर पढ़ते हैं :

सगे मदीना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी عُفِیَ عَنْہُ की त़रफ़ से तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी...... **जगह का नाम ह़ज़्फ़ कर दिया है**...... की मजलिसे मुशा-वरत के निगरान, अराकीन और ज़िम्मादार इस्लामी भाइयों की ख़िदमात में नफ़रतें मिटाने वाले और मह़ब्बतें फैलाने वाले प्यारे प्यारे आक़ा मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के इमामए पुर अन्वार के बोसे लेता हुवा, गेसूए ख़मदार को चूमता हुवा, मदीने की गलियों में घूमता हुवा, झूमता हुवा मुश्कबार सलाम !!!

फिर दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत बयान करने के बा'द फ़रमाते हैं :

"बाहमी शकर रन्जियों, बार बार सुल्ह़ कर लेने के बा वुजूद एक दूसरे पर की जाने वाली नुक्ता चीनियों के बाइ़स उठने वाले नित नए फ़ितनों और उस के सबब दीन के अ़ज़ीम म-दनी कामों को नुक़्सानों से बचाने, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पाने और सवाबे आख़िरत कमाने के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ आप ह़ज़रात की ख़िदमात में तह़रीरी ह़ाजिरी की सआ़दत पा रहा हूं। अगर मेरी म-दनी इल्तिजाओं को ह़िर्ज़े जान बना लेंगे और कम अज़ कम 12 माह तक हर महीने फ़र्दन फ़र्दन या ज़िम्मादारान को इकठ्ठा कर के इज्तिमाई त़ौर पर इसी "मक्तूबे अ़त्तार" का मुत़ा-लआ़ फ़रमा लेंगे तो आप सब गुलज़ारे अ़त्तार के गुलहाए मुश्कबार बन कर इस्लामी मुआ़-शरे को सदा महकाते रहने में اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ काम्याबी पाते रहेंगे। अगर मेरी

मा'रूज़ात को ख़ातिर में नहीं लाएंगे और ग़-लती करने वाले की तन्ज़ीमी तरकीब के मुताबिक़ इस्लाह़ करने के बजाए बिला मस्ल-ह़ते शर-ई एक दूसरे को बताते फिरेंगे और आपस में लड़ते लड़ाते रहेंगे तो अ़दावतों, कीनों, ग़ीबतों, चुग़लियों, दिल आज़ारियों, ऐ़ब दरियों और बद गुमानियों वग़ैरा वग़ैरा हलाकत सामानियों के ज़रीए़ अपने आप को مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जहन्नम का ह़क़दार बनाते रहेंगे। काश ! प्यारे प्यारे **अल्लाहु रह़मान** عَزَّوَجَلَّ के मुक़द्दस कुरआन और सुल्ताने दो जहान, रह़मते आ़-लमियान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के पाकीज़ा फ़रमान के फ़ैज़ान से किया जाने वाला मुझ सरापा गुनाह व इ़स्यान का मुल्तजियाना बयान आप सब के कुलूब व अज़्हान पर चोट लगने का बाइ़स बन कर इस्लाह़ का सामान हो जाए। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मेरा समझाना राएगां नहीं जाएगा। पारह 27, **सू-रतुज़्ज़ारियात** की आयत नम्बर 55 में इर्शादे रब्बे जुल मिनन है :

وَذَكِّرْ فَاِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِيْنَ﴿۵۵﴾ (پ۲۷، الذّٰریٰت:۵۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और समझाओ कि समझाना मुसल्मानों को फ़ाएदा देता है।

(ना चाक़ियों का इ़लाज, स. 3 ता 5)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अब आइये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के उस दिल नशीन अन्दाज़े बयान के इख़्तितामी जुम्ले पढ़ते हैं और येह भी देखते हैं कि इस तह़रीरे पुर तासीर ने शकर रन्जियों में मुब्तला इस्लामी भाइयों पर क्या असर डाला। चुनान्चे,

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बराए करम ! मुझ सगे मदीना عُفِیَ عَنْہ का मान रख लीजिये। मेरा दिल न तोड़िये, अब गुस्सा थूक दीजिये और सआ़दत मन्दी का सुबूत देते हुए आपस के इख़्तिलाफ़ात

ख़त्म कर दीजिये, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में रो रो कर तौबा कीजिये और एक दूसरे की साबिक़ा लग्ज़िशें मुआफ़ कर दीजिये। एक दूसरे से मुआफ़ी तलाफ़ी कर लेने के बा'द मेहरबानी फ़रमा कर नीचे दी हुई तह़रीर को पढ़/ सुन कर और अच्छी त़रह़ समझ कर अपनी आख़िरत की बेहतरी के लिये नीचे दस्त ख़त़ कर के इस की Copy मुझे इरसाल फ़रमा कर मुझ पापी व बदकार गुनहगारों के सरदार का दिल ख़ुश कर दीजिये। (اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ सब इस्लामी भाइयों को जम्अ़ कर के जब मक्तूबे अ़त्तार पढ़ कर सुनाया गया तो उन्हों ने बा चश्मे नम इख़्तिलाफ़ात ख़त्म कर दिये और आपस में सुल्ह़ कर के तह़रीर पर दस्त ख़त़ कर दिये)

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

सुन्नत को फैलाया है अमीरे अहले सुन्नत ने
बिदअ़त को मिटाया है अमीरे अहले सुन्नत ने

हज़ारों गुम रहों को वा'ज़ और तह़रीर से अपनी
रहे जन्नत दिखाया है अमीरे अहले सुन्नत ने

करा कर बहुत से कुफ़्फ़ार और फ़ुज्जार से तौबा
जहन्नम से बचाया है अमीरे अहले सुन्नत ने

हज़ारों आ़शिक़ाने लन्दनो पेरिस को दीवाना
मदीने का बनाया है अमीरे अहले सुन्नत ने

लाखों फ़ेशनी चेहरों को दाढ़ी और सरों को भी
इमामे से सजाया है अमीरे अहले सुन्नत ने

वोह फ़ैज़ाने मदीना रात दिन तक़्सीम करता है
जिसे मर्कज़ बनाया है अमीरे अहले सुन्नत ने

बहुत मेहनत लगन से अपने प्यारे दीन का डंका
दुन्या में बजाया है अमीरे अहले सुन्नत ने

इलाही फूलता फलता रहे रोज़े ह़श्र तक येह
गुलिस्तां जो लगाया है अमीरे अहले सुन्नत ने

इस नाकारा आ़इज़ को ख़ुलूस अपने की शम्अ़ का
परवाना बनाया है अमीरे अहले सुन्नत ने

दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के निगरान हज़रते मौलाना हाजी मुहम्मद इमरान अत्तारी سَلَّمَهُ الْبَارِی के तहरीरी बयानात

तब्अ़ शुदा

फ़ैज़ाने मुर्शिद (कुल सफ़हात 32)

एहसासे ज़िम्मादारी (कुल सफ़हात 48)

जन्नत की तय्यारी (कुल सफ़हात 106)

वक़्फ़े मदीना (कुल सफ़हात 74)

म-दनी कामों की तक़्सीम (कुल सफ़हात 47)

म-दनी कामों की तक़्सीम के तक़ाज़े (कुल सफ़हात 52)

म-दनी मश्वरे की अहम्मिय्यत (कुल सफ़हात 32)

सूद और उस का इलाज (कुल सफ़हात 92)

सीरते सय्यिदुना अबुद्दरदाअ (कुल सफ़हात 75)

फ़ैसला करने के म-दनी फूल (कुल सफ़हात 56)

ज़ेरे तब्अ़

प्यारे मुर्शिद (कुल सफ़हात 48)

बुराइयों की मां (कुल सफ़हात 112)

ज़ेरे तरतीब

अमीरे अहले सुन्नत की दीनी ख़िदमात

अमीरे अहले सुन्नत और दा'वते इस्लामी

ग़ैरत मन्द शोहर

पीर पर ए'तिराज़ मन्अ़ है

हमें क्या हो गया है ?

सहाबी की इन्फ़िरादी कोशिश